Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 29 • 20 अप्रैल - 26 अप्रैल 2026 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 18-04-2026 • पेज 12 ₹ 10 रुपये

भिक्षुवाणी

विण अंकुस जिम हाथी चाले, घोड़ो विगर लगाम।
एहवी चाल कुगुरु री जांणों, कहिवा नें साधु नांम।।

अंकुश के बिना हाथी चल रहा है और लगाम के बिना घोड़ा चल रहा है। कुगुरु की चाल भी ऐसी ही है, वह साधु का नाम धराता है किन्तु संयम के बिना चल रहा है।

– आचार्यश्री भिक्षु

अनावश्यक संग्रह से बचें, असंग्रह वृत्ति ही अहिंसा का सुरक्षा कवच : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समभाव रखना ही वास्तविक साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 10

Address Here

आचार्य महाप्रज्ञ एक कालजयी दार्शनिक संत, जिनका ज्ञान और ध्यान विश्व के लिए वरदान : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य महाप्रज्ञजी के 16वें महाप्रयाण दिवस पर लाडनूं में उमड़ी श्रद्धा, पूज्यप्रवर ने दी भावांजलि

युवा शक्ति : अभातेयुप के 'उत्तरांचल सम्मेलन' ने युवाओं में भरा जोश

लाडनूं।
13 अप्रैल, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी ने धर्मसंघ के दसवें आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के 16वें महाप्रयाण दिवस पर उन्हें भावांजलि अर्पित की। जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में आयोजित विशेष धर्मसभा में आचार्यश्री ने महाप्रज्ञजी के कालजयी व्यक्तित्व, आगम संपादन और प्रेक्षाध्यान के क्षेत्र में उनके ऐतिहासिक अवदानों को रेखांकित किया।

ज्ञान और प्रज्ञा का संगम था 'महाप्रज्ञ' व्यक्तित्व :

आचार्यश्री ने फरमाया कि बैसाख कृष्णा एकादशी का दिन इतिहास में 'महाप्रज्ञ' महाप्रयाण दिवस के रूप में दर्ज है। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि विक्रम संवत 2035 के गंगाशहर चातुर्मास में आचार्य तुलसी ने मुनिश्री नथमलजी (टमकोर) की विलक्षण मेधा को देखते हुए उन्हें 'महाप्रज्ञ' अलंकरण प्रदान किया था। नब्बे वर्षों का यशस्वी जीवन जीने वाले आचार्य श्री महाप्रज्ञ तेरापंथ के दस आचार्यों में सर्वाधिक आयुष्य प्राप्त करने वाले आचार्य थे।

आगम संपादन और प्रेक्षाध्यान के प्रणेता :

आचार्यश्री ने फरमाया कि महाप्रज्ञजी का नाम विश्व पटल पर एक 'दार्शनिक संत' के रूप में विख्यात हुआ। उन्होंने गुरुदेव तुलसी के साथ मिलकर आगम संपादन के कार्य में अपना संपूर्ण जीवन लगा दिया। प्रेक्षाध्यान जैसी वैज्ञानिक पद्धति उनकी वह अनमोल देन है, जो आज विदेशों तक मानवता को शांति प्रदान कर रही है। आचार्यश्री ने स्वयं रचित गीत के माध्यम से अपने आराध्य गुरुदेव के प्रति गहन श्रद्धा निवेदित की।

आचार्य तुलसी के साथ 'तुलसी-महाप्रज्ञ' की बेमिसाल जोड़ी :

> 'महाप्रज्ञ' केवल नाम नहीं, ज्ञान और वैज्ञानिक अध्यात्म का पर्याय
> -आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य प्रवर ने गुरु-शिष्य के अद्वितीय संबंध की चर्चा करते हुए फरमाया कि महाप्रज्ञजी ने मुनि, युवाचार्य और आचार्य के रूप में गुरुदेव तुलसी के साथ एक लंबा सफर तय किया।

(शेष पेज 9 पर)

अहिंसा का मंत्र: किसी के जीवन में बाधा न बनना ही सच्ची मैत्री

सत्य की खोज के लिए मस्तिष्क के द्वार खुले रखना जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
14 अप्रैल, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान की। 'सत्य की खोज और मैत्री' विषय पर प्रकाश डालते हुए आचार्य श्री ने फरमाया कि सच्चाई को जानने के लिए साधना का योग होना अनिवार्य है।

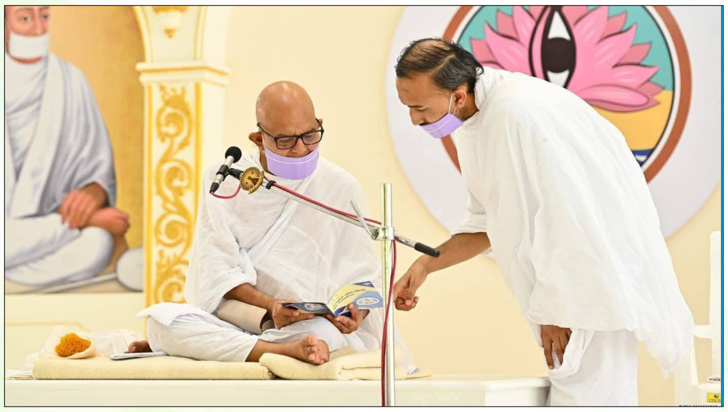

1. सत्य की प्राप्ति और साक्षात्कार के सूत्र :

अनाग्रह और खुला मस्तिष्कः आचार्य श्री ने फरमाया कि सच्चाई की खोज के लिए 'अनाग्रह' (बिना किसी पूर्व धारणा के) होना आवश्यक है। जो व्यक्ति पूर्वाग्रह से ग्रस्त होता है, उसके लिए सत्य के द्वार बंद हो जाते हैं। सत्य के साक्षात्कार हेतु मस्तिष्क के द्वारों को खुला रखना अनिवार्य है।

तटस्थ समीक्षाः ज्ञान की चर्चा और शोध के समय तार्किकता एवं समीक्षात्मक बुद्धि का उपयोग करना चाहिए। यदि वक्ता की कोई बात संगत न लगे, तो उसे गहराई से समझकर ही स्वीकार करना चाहिए।

दृढ़ता और साहस : सत्य को प्राप्त करने के बाद उसकी सुरक्षा के लिए मनोबल और साहस का होना भी अपेक्षित है।

(शेष पेज 9 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 अप्रैल - 26 अप्रैल 2026

शरीर रूपी नौका से करें पूर्व कर्मों का क्षय, मोक्ष के लिए जिएं जीवन : आचार्यश्री महाश्रमण

भोग और यश के लिए नहीं, बल्कि साधना के लिए है यह मानव देह

लाडनूं।
11 अप्रैल, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्म संघ के एकादशमाधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'जीवन क्यों जीएं?' जैसे गहन दार्शनिक प्रश्न का आगम की रोशनी में समाधान किया।

जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य भौतिक सुख नहीं, बल्कि आध्यात्मिक साधना और मोक्ष की प्राप्ति होना चाहिए।

आत्मा और शरीर का संयोग ही जीवन :

आचार्यश्री ने जीवन के स्वरूप को परिभाषित करते हुए फरमाया कि

हमारे औदारिक शरीर और आत्मा का संयुक्त होना ही 'जीवन' है। इन दोनों का वियोग 'मृत्यु' कहलाता है, किंतु यदि यह वियोग सदैव के लिए हो जाए, तो वह 'मोक्ष' की परम स्थिति है। पूज्यप्रवर ने स्पष्ट किया कि न तो अकेला शरीर और न ही अकेली आत्मा जीवन कहला सकती है; दोनों का समन्वय ही मनुष्य का अस्तित्व है।

क्यों जीएं? आगम का मार्गदर्शन :

'उत्तरज्झयणाणि' आगम का हवाला देते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि जीवन केवल यश, कीर्ति या बाह्य जगत की आसक्ति के लिए नहीं है। पूज्य प्रवर ने फरमाया — 'आदमी को पूर्व कर्मों के क्षय के लिए इस देह को धारण करना चाहिए। शरीर एक नौका के समान है, जिसके माध्यम से संयम और तप की साधना कर संसार सागर को पार किया जा सकता है।' पूज्य प्रवर ने साधु और गृहस्थ दोनों को सचेत करते हुए फरमाया कि आवश्यक वस्तुओं का उपयोग करते समय भी मोह और 'मूर्च्छा' से बचना चाहिए।

> 'मोक्ष' के लिए जिएं, 'मोह' के लिए नहीं
> -आचार्यश्री महाश्रमण

साधना के सूत्र :

आचार्यश्री ने मोक्ष की ओर बढ़ने के व्यावहारिक सूत्र प्रदान किए:

आहार का अल्पीकरण : शरीर को केवल उतना पोषण दें जिससे साधना अच्छी चल सके।

अल्पोपधि : भौतिक उपकरणों के प्रति कम से कम लगाव रखें।

अहिंसा और संयम : जीवन में अहिंसा, ध्यान और निरंतर साधना को प्राथमिकता दें।

पूर्व गृह राज्य मंत्री राजेंद्र दर्डा ने लिया आशीर्वाद : इस अवसर पर महाराष्ट्र के पूर्व गृह राज्य मंत्री श्री राजेंद्र दर्डा विशेष रूप से उपस्थित हुए। उन्होंने छत्रपति संभाजीनगर (औरंगाबाद) के श्रद्धालुओं के साथ आचार्य प्रवर के दर्शन किए और मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रवचन के पश्चात आचार्यश्री ने चारित्रात्माओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।

अनावश्यक संग्रह से बचें, असंग्रह वृत्ति ही अहिंसा का सुरक्षा कवच : आचार्यश्री महाश्रमण

'परस्परोपग्रहो जीवानाम्': एक-दूसरे का सहयोग ही सृष्टि का आधार

लाडनूं।
12 अप्रैल, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी ने 'संग्रह वृत्ति-बढ़े क्यों?' विषय पर पावन प्रतिबोध प्रदान किया। जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि जीवन में 'असंग्रह' की चेतना जाग्रत होने पर ही मनुष्य हिंसा और मानसिक विकारों से बच सकता है।

सहयोग ही जीवन का आधार :

आचार्यश्री ने जैन दर्शन के षट्द्रव्यवाद और नवतत्त्वों की व्याख्या करते हुए फरमाया कि इस सृष्टि में पूर्णतया निरपेक्ष होकर जीना असंभव है। मनुष्य को गति के लिए धर्मास्तिकाय, स्थिति के लिए अधर्मास्तिकाय और स्थान के लिए आकाशास्तिकाय का निरंतर सहयोग मिलता है। पूज्य प्रवर ने आचार्य उमास्वाति के सूत्र 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' को उद्धृत करते हुए फरमाया कि जीव एक-दूसरे के पूरक हैं। जिस प्रकार बीमार को डॉक्टर और विद्यार्थी को शिक्षक की आवश्यकता होती है, वैसे ही समाज के हर वर्ग को एक-दूसरे के सहयोग की अपेक्षा रहती है।

पक्षी की भांति निस्पृह रहे साधु :

संग्रह वृत्ति पर प्रहार करते हुए आचार्यश्री ने आगम वाणी का उदाहरण प्रदान दिया। पूज्य प्रवर ने फरमाया — 'जिस प्रकार पक्षी केवल अपने पंखों के भार के साथ आकाश में स्वच्छंद उड़ जाता है, उसी प्रकार साधु को भी अनावश्यक पौद्गलिक वस्तुओं के संग्रह से बचना चाहिए। साधु केवल अपने पात्र लेकर भविष्य की चिंता किए बिना विचरण करे, यही सच्ची निर्जरा है।'

पूज्य प्रवर ने फरमाया कि असंग्रह की भावना न केवल साधु बल्कि गृहस्थ जीवन में भी शांति और अहिंसा की स्थापना करती है।

शासनश्री साध्वी चंदनबालाजी को दी गई सामूहिक भावांजलि :

प्रवचन के उपरांत शासनश्री साध्वी चंदनबालाजी की स्मृति सभा का आयोजन हुआ। आचार्यश्री ने उनके संयममय जीवन का परिचय देते हुए उनकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना की। इस अवसर पर सम्पूर्ण चतुर्विध धर्मसंघ ने 'चार लोगस्स' का सामूहिक ध्यान किया।

श्रद्धासुमन अर्पित किए :

> संग्रह नहीं, 'असंग्रह' की चेतना जगाएं
> -आचार्यश्री महाश्रमण

मुख्य मुनिश्री महावीर कुमारजी, साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी और साध्वी वर्या श्री संबुद्धयशाजी ने साध्वीजी के प्रति मंगलकामनाएं व्यक्त कीं। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत का संगान किया। शासन गौरव साध्वी राजीमतीजी, साध्वी कनकश्रीजी, मुनि कमलकुमारजी सहित अनेक चारित्रात्माओं ने अपने विचार रखे। साध्वीजी के संसारपक्षीय परिवार की ओर से श्री पुनीत जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में आयोजित

उत्तरांचल स्तरीय युवा सम्मेलन—'चलो लाडनूं'

लाडनूं।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित उत्तरांचल स्तरीय युवा सम्मेलन 'चलो लाडनूं' का भव्य आयोजन 12 से 14 अप्रैल 2026 तक लाडनूं में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। यह सम्मेलन युवाओं के लिए प्रेरणा, प्रशिक्षण और संगठनात्मक सुदृढ़ता का एक महत्वपूर्ण मंच साबित हुआ।

कार्यक्रम की सफलता के लिए परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के श्रीचरणों में कृतज्ञता ज्ञापित की गई, जिनके पावन आशीर्वाद से यह आयोजन संभव हो सका।

आचार्य प्रवर व साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी का सान्निध्य युवा साथियों के लिए विशेष प्रेरणास्रोत रहा।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी, बहुश्रुत परिषद सदस्य मुनि दिनेश कुमार जी, तेरापंथ युवक परिषद के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी एवं तेरापंथ किशोर मंडल के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि नय कुमार जी ने अपने प्रेरक प्रशिक्षण से युवा शक्ति को जागृत एवं मार्गदर्शित किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत, उपाध्यक्ष अनंत बागरेचा, अभिनंदन नाहटा, महामंत्री सौरव पटावरी, सहमंत्री पवन नौलखा, अंकुर लूनिया, कोषाध्यक्ष विकास बोथरा एवं संगठन मंत्री रोहित कोठारी सहित संपूर्ण ABTYP टीम के नेतृत्व, दूरदर्शिता एवं परिश्रम के कारण यह आयोजन अत्यंत सफल एवं प्रभावशाली रहा। साथ ही पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष बी.सी. भालावत, संदीप कोठारी एवं निवर्तमान अध्यक्ष रमेश डागा के मार्गदर्शन को भी सराहा गया।

इस अवसर पर कर्नल राज्यवर्धन राठौड़, मनिंदर जीत सिंह बिट्टा, दिलीप बैद एवं अरविंद मांडोत जैसे विशिष्ट अतिथियों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए युवाओं को राष्ट्र सेवा, नेतृत्व क्षमता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया।

सम्मेलन के सफल आयोजन में संयोजक जितेश पोखरणा के नेतृत्व में सह-संयोजक पीयूष लुणिया, अमित डूंगरवाल, विशाल पाटनी, सिद्धार्थ सोलंकी, मनीष डागा सहित संपूर्ण टीम का विशेष योगदान रहा। प्रबंध मंडल के मार्गदर्शन में सभी व्यवस्थाएँ सुव्यवस्थित एवं प्रभावी रूप से संचालित की गईं।

उत्तरांचल क्षेत्र की विभिन्न 68 शाखाओं से आए 555 युवा साथियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए इस सम्मेलन को सार्थक बनाया। यह आयोजन संगठनात्मक एकता, आपसी समन्वय एवं युवा शक्ति के सशक्तिकरण का उत्कृष्ट उदाहरण रहा।

सम्मेलन के माध्यम से युवाओं को प्राप्त प्रशिक्षण, प्रेरणा एवं मूल्यों को अपने व्यक्तिगत जीवन एवं संगठनात्मक कार्यों में उतारने का आह्वान किया गया।

कार्यक्रम के दौरान आयोजित विविध गतिविधियों ने युवाओं में उत्साह, जागरूकता और सकारात्मक ऊर्जा का संचार किया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता ने ज्ञानवर्धन किया, वहीं भावांजलि ने आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण किया। हिट एंड फिट युवा रैली के माध्यम से स्वास्थ्य के प्रति सजगता का संदेश दिया गया, जबकि नेत्रदान प्रचार ने समाज सेवा की भावना को जागृत किया। अहिंसा रैली के जरिए शांति और सद्भाव का प्रभावी संदेश प्रसारित किया गया।

तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का भव्य आयोजन

कोलकाता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के निर्देशन में तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा कोलकाता, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा मध्य-उत्तर कोलकाता के द्वारा संयुक्त रूप से ओसवाल भवन में आयोजित किया गया।

कार्यशाला के मुख प्रशिक्षक उपासक अध्यापक निर्मल नौलखा थे। कार्यशाला में लगभग 122 भाई-बहिनों ने भाग लिया। इस अवसर पर उपस्थित धर्म सभा को उद्बोधन देते हुए मुनिश्री जिनेश कुमार ने कहा जिनशासन का एक धार्मिक संगठन है-तेरापंथ । तेरापंथ तेजस्वी, यशस्वी मनस्वी शासन है। उसकी तेजस्विता का मूल आधार आचार है।

आचार्य भिक्षु इस संगठन के आधप्रवर्तक थे। वे अपने युग के विलक्षण, विचक्षण, विशिष्ठ, विवेक संपन्न व युगस्रष्टा पुरुष थे। वे जमाने के थपेड़ों से घबनाए नहीं। जब उन्हें सत्य का प्रकाश मिला, तब उन्होंने निर्भीक होकर कर उस जमाने की स्थितियों पर खुलकर सैद्धांतिक विश्लेषण किया। वे क्रांतिकारी आचार्य के रूप में पहचाने गए। उनकी धर्म क्रांति की फलश्रुति तेरापंथ है। मुनि ने आगे कही आचार्य भिक्षु अकंप आत्मबला के धनी थे। उनका साहस, धृति और परिस्थितियों से लोहा लेने का संकल्प अटूट था। वे चले प्रकृति ने उनको चेतानवी दी। वे घबराए नही। श्मशान की छत्तारयों में उन्होंने अपनी यात्रा का पहला पड़ाव किया। वे विशिष्ठ व्यक्तित्व के घनी थे। उनका व्यक्तित्व बेजोड़ था। वे अभयशील, योगसाधक तपे हुए महान पुरुष थे। उन्होंने जो मार्ग बताया उस मार्ग पर चलने से आत्मा का उत्थान होगा। तेरापंथ को समझना सत्य को समझना है । तेरापंथ मेरापंथ हो जाए यही मंगलभावना करता हूं।

मुनि कुणालकुमार जी ने गीतका संगान किया। उपासक प्रवक्ता निर्मलजी नौलखा ने कहा- तेरापंथ के दर्शन को समझना आवश्यक है। उन्होंने प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, मध्य कोलकाता के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण राजेन्द्र संचेती ने दिया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता के अध्यक्ष अजय जी भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यशाला के अंत में आभार ज्ञापन रूपचन्दजी श्रीमाल, ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनिपरमानंद जी ने किया।

कार्यशाला के विभिन्न सत्र सायं लगभग 4.30 बजे तक चले। जिसमें मुनि जिनेश कुमारजी व उपासक प्राध्यापक निर्मल नौलखा ने संभागियो को प्रशिक्षण प्रदान किया। इस अवसर पर महासभा के प्रधान प्रधान न्यासी सुरेश जी गोयल आदि गणमान्य लोग विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में कार्यकर्ताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का हुआ आयोजन

टोहाना।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देश अनुसार प्रेक्षा वाहिनी टोहाना के तत्वावधान में अप्रैल मास की प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण नमस्कार महामंत्र के संगान से किया गया। इसके पश्चात सामूहिक रूप से प्रेक्षाध्यान गीत का संगान किया गया। इस अवसर पर अनुप्रेक्षा, लेशाध्यान, कायोत्सर्ग, श्वास प्रेक्षा व प्राणायाम के प्रयोग किए गए तथा इस अवसर पर आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का रिकॉर्डेड प्रवचन भी श्रवण किया गया। सुभाष जैन ने कहा की प्रेक्षाध्यान आत्म कल्याण एवं आत्मा को निर्मल व निरामय बनाने का सशक्त माध्यम है।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
20 अप्रैल - 26 अप्रैल 2026

शासनश्री साध्वी चन्दनबाला जी के प्रति चारित्रात्माओं के उद्गार

दीक्षा की स्वीकार

● मुनि कमल कुमार ●

गुरु तुलसी मुख कमल से, दीक्षा की स्वीकार।
महाश्रमण युग में किया, अपना बेड़ापार।।

जन्मी छातर गाँव में, चन्दनबाला नाम।
गुरु सेवा में रत सतत, जीवन था अभिराम।।

शासन माता की सखी, मिलनसार दिलदार।
राज गोचरी हित सदा, रहती थीं तैयार।।

शासनश्री से अलंकृता, गण भक्ति में लीन।
वर्धमान कुंदन सती, दीक्षित घर के तीन।।

संथारा कर अंत में, शहर अहमदाबाद।
चली गईं सुरलोक में, छोड़ सुनहरी याद।।

सभा सुधर्मा में स्मरण, करते बारम्बार।
विविध कलाओं में निपुण, उज्ज्वल था आचार।।

करके उत्तम साधना, शीघ्र वरें शिवद्वार।
कमल हृदय की भावना, करें आप स्वीकार।।

करता हूँ दिल से गुणगान

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

साध्वी चन्दनबाला जी ने किया स्वर्ग प्रस्थान,
करता हूँ दिल से गुणगान।।

गुरु तुलसी से दीक्षा पाई, पा संयम दिल में हरषाई,
महायज्ञ की कृपा सवाई, महाश्रमण गुरु के मन भाई,
साधु-सतियों का दिल जीता, ऐसी थीं वो महान।।

वर्षों तक गुरु सेवा करके, अपना आत्म खजाना भरके,
कभी नहीं रही वो डर-डरके, जीवन जीया साहस धरके।।

योगक्षेम वर्ष में जाना, अहमदाबाद में मन में ठाना,
पर क्या होगा किसने जाना, आया काल हो गई रवाना,
धरे-धराए रह गए दिल में, दिल के अरमान।।

साध्वी चन्दनबाला जी का, अजब काम का गजब तरीका,
शानदार था और सलीका, मैंने भी उनसे कुछ सीखा,
मुनि चैतन्य अमन के दिल में, है पूरा सम्मान।।

जागरण की ज्योति थीं- शासनश्री साध्वी चन्दनबाला जी

● साध्वी अणिमाश्री ●

साध्वीश्री अणिमाश्री जी और प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अहमदाबाद (पश्चिम) स्थित तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी चन्दनबाला जी की स्मृति सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए साध्वीश्री अणिमाश्री जी ने कहा—'शासनश्री साध्वी चन्दनबाला जी ने संयम का लंबा पर्याय जागरण के साथ पूर्ण किया।' उनका मधुर व्यवहार, सहजता और उदार चेतना प्रशंसनीय थी। संघ और गुरु शरण में गति व प्रगति करते हुए उन्होंने सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त की।

असाध्य रोग के बावजूद उनकी समभाव की साधना अनवरत चलती रही और प्रशस्त भावों के साथ अनशन यात्रा संपन्न कर वे प्रयाण कर गईं। वे जागरण की प्रज्वलित ज्योति थीं। उनके साथ अपने अतीत के अनुभवों को साझा करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि उनका जीवन अनेक गुणों का समवाय था। जिस श्रद्धा और संकल्प के साथ उन्होंने धर्मसंघ में प्रवेश किया, उत्तरोत्तर अपनी कार्यक्षमता और साधना से वे विशिष्ट बन गईं। शासनश्री की सहोदरी व सहवर्तिनी साध्वी वर्धमानश्री जी, साध्वी राजश्री जी, साध्वी समीक्षाप्रभा जी, साध्वी प्रणवयशा जी और सिद्धियशा जी ने सेवा के दायित्व का सजगता से निर्वहन किया, यह उनके सौभाग्य की बात है।

प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा—'जागरण के साथ जिया गया वर्तमान, प्रेरक अतीत बन जाता है।' शासनश्री साध्वी चन्दनबाला जी क्रियाशील, कर्मठ, सेवाभावी, औदार्यपूर्ण जीवन जीने वाली और वात्सल्य प्रदात्री विशिष्ट साध्वी थीं। वे अपने सद्गुणों की सुवास छोड़कर प्रस्थान कर चुकी हैं, जो सदैव हमें प्रेरणा देती रहेगी।

साध्वी कर्णिकाश्री, साध्वी सुदर्शनप्रभा, साध्वी सुधाप्रभा, साध्वी सम्यकयशा, साध्वी मैत्रीप्रभा, साध्वी राजुलप्रभा और साध्वी शौर्यप्रभा ने सामूहिक संगान कर दिवंगत साध्वीश्री जी के आध्यात्मिक आरोहण की मंगलकामना की। अहमदाबाद (पश्चिम) तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश दक, बाबूलाल सेखानी और रजनी दुगड़ ने श्रद्धा-भावना प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने किया।

❖ सत्य के मार्ग पर चलने में परेशानी आ सकती है, किंतु सच्चाई के मार्ग पर चलने से मिलने वाली मंजिल सुखद होती है।
— आचार्य श्री महाश्रमण

❖ सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है। माया अविश्वास का घर है। जहां सरलता है, वहां आत्मशुद्धि है, विश्वास भी है।
— आचार्य श्री महाश्रमण

प्रेरणा स्रोत हैं चन्दनबाला

● साध्वी नीति प्रभा, हिसार ●

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। निज का उत्थान-पतन उसके अपने ही वश की बात है। यह तथ्य जितना सच है, उतना ही यह भी सही है कि उसके ऊपर वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। साथ ही यह भी सच है कि बुरे वातावरण में रहकर कदाचित ही कोई अपनी विशिष्टता बना सकता है। वास्तव में देखा जाए तो समर्थ लोगों के क्रिया-कलाप ही वातावरण बनाते हैं। शासनश्री साध्वी चन्दनबाला जी एक ऐसी ही सक्षम और समर्थवान साध्वी थीं। आप धुन की पक्की थीं। शुद्ध वातावरण बनाए रखने की उनमें विशेष कला थी। उन्होंने अपने भाग्य की पोथी लिखने के लिए विनम्रता, सहजता, सरलता और श्रमनिष्ठा को अपनी लेखनी बनाया। इतना ही नहीं, उनके पास रहने वाली नव-दीक्षित साथियों को भी वे पूरे मनोयोग से विकास का खुला मैदान देती थीं, ताकि वे पूरे मनोभाव से उस मैदान में उतरकर विजय प्राप्त कर सकें और अपने आपको सक्षम व मजबूत बना सकें।

सन् 2003 में मेरी दीक्षा हुई। दीक्षा लेने के कुछ समय बाद मेरे पैर के पंजे का मांस कट जाने के कारण मुझे गुरुदेव जलगाँव नहीं लेकर पधारे। उसी समय साध्वी चन्दनबाला जी का ऑपरेशन हुआ था, इस कारण वे भी साथ नहीं गईं। मुझे 'पाड़ियों' (सेवा हेतु रुकने वाले) का कहकर उनके पास रख दिया गया। साध्वी चन्दनबाला जी का ज्ञान के प्रति विशेष अनुराग था। आप प्रेरणा देतीं कि 'देखो, गुरुदेव के दर्शन हों तब तक तुम्हें उत्तराध्ययन (वरावैआलियं) पूरा कंठस्थ करना है।' वे रोज सुबह लगभग तीन बजे उठकर कंठस्थ करवातीं और सुनतीं। मुझे गीतिका, कविता बनाने व बोलने का भी अभ्यास करवातीं। उन्होंने केवल ज्ञान का ही विकास नहीं करवाया, बल्कि कलाओं में भी मुझे निष्णात बना दिया। आप अपनी कला को दूसरों में बाँटकर बहुत प्रसन्न होती थीं। सिलाई, रंगाई का काम भी कुछ ही समय में मुझे सिखा दिया। मैं मानती हूँ कि आज यह कार्यक्षमता उनकी ही देन है, जो मेरे जीवन की धरोहर बन गई है।

आपका वात्सल्य भाव तो बड़ा ही बेजोड़ था। प्रसंग लाडनूँ का है। गुरुदेव के दर्शन होने के बाद साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभा जी ने फरमाया—'साध्वी नीतिप्रभा जी को हमने पाड़ियों में रुकने के लिए कहा था, अब उन्हें वापस ले रहे हैं।' चन्दनबाला जी ने निवेदन किया—'इन्हें हमारे पास ही रहने दो।' जब शासन माता ने मुझे उनके पास रखने से मना कर दिया, तो आप मेरे पास आईं और कहा—'नीतिप्रभा जी, साध्वी प्रमुखा श्री जी तुम्हें वंदना के लिए बुलाना चाहती हैं। तुम जाओ और महाराज को निवेदन कर दो कि मैं तो साध्वी चन्दनबाला जी के पास ही रहूँगी।' मैंने पूछा—'आपने निवेदन क्यों नहीं किया?' आपने कहा—'मैंने मना किया था, पर महाराज तुम्हें माँग रहे हैं। यदि तुम स्वयं मना करोगी तो तुम्हें कहीं नहीं भिजवाएँगे।'

मैंने निवेदन किया कि यदि महाराज आपका निवेदन मान जाते तो अच्छा होता, अन्यथा मुझे तो जहाँ गुरुदेव भेजेंगे, वहीं जाने का भाव है। मैं अपने मन से कभी नहीं कहूँगी कि मुझे कहाँ रहना है। उन्होंने मुझे बहुत समझाया। उनके नेत्र सजल हो गए। उनके भावों से साफ झलक रहा था कि उनका मुझ पर कितना वात्सल्य और कृपा भाव है। सूरत में मुझे मलेरिया हुआ और वह बिगड़ गया। लगभग चार-चार माह तक बुखार आने लगा। आपने जो मेरी सेवा की और करवाई, वह मेरे लिए प्रेरणा स्रोत बन गई कि सेवा कैसे करनी चाहिए। न जाने आपने कितने ही जीवन संस्कारों से निर्मित किए होंगे। वास्तव में ऐसी महान आत्मा के लिए मैं आभारी हूँ और रहूँगी।

होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, नहीं मुझमें किसी के अवगुण आवें।
गुण-ग्राम का भाव रहे नित्य, जीवन चन्दन बन महकावे।।

नवकार महामंत्र की आराधना

नवकार महामंत्र में पतित को पावन और कंकर को शंकर बनाने की ताकत

गांधीनगर, बैंगलोर।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के विद्वान सुशिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ठाणा 2 मंगल सानिध्य में जयनगर श्री धर्मनाथ श्वेतांबर जैन मंदिर परिसर में जीतो द्वारा निर्देशित विश्व नवकार महामंत्र दिवस कार्यक्रम का आयोजन सकल जैन समाज द्वारा आयोजित किया गया।

इस अवसर पर डॉ मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा नवकार महामंत्र में पतित को पावन और कंकर को शंकर बनाने की ताकत है। इसमें पंच परमेष्ठी स्वरूप महान आत्माओं को नमन किया गया है। महामंत्र का महत्व उजागर करते हुए मुनिश्री ने कहा वर्तमान समय में अशांत विश्व को शांति का संदेश देने वाला नवकार महामंत्र है, इससे अहंकार और ममकार विसर्जन की प्रेरणा मिलती है। मुनिश्री ने आगे कहा वर्तमान युग को अहंकार की नहीं नवकार की जरूरत है जो नम्रता सीखाता है, नवकार महामंत्र मनुष्य के भीतर शैतानियत को दूर कर शंकरत्व प्रकट करता है। नवकार महामंत्र को महामंत्र इसलिए कहा जाता है कि इसके जाप से जैन धर्म में उच्च कोटि की साधना करके उत्तम समाधि प्राप्त होती है।

नचिकेता मुनि आदित्य कुमार जी ने नवकार महामंत्र गीत का संगान किया। कार्यक्रम में जयनगर महिला मंडल ने स्वागत गीत, तूफान मांडोत तथा श्री धर्मनाथ स्वामी भजन मंडली ने नवकार महामंत्र पर आधारित गीत प्रस्तुत किया।

स्वागत भाषण श्री धर्मनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ जयनगर के अध्यक्ष चंद्रकुमार सिंघवी ने तथा तेरापंथ समाज जयनगर के अध्यक्ष उदयलाल पोकरणा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन पंडित रोहित जी द्वारा हुआ।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में पूर्वांचल प्रेक्षावाहीनी के तत्वावधान में प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला का आयोजन हुआ। जिसमें 40 से अधिक संभागी थे। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमार ने कहा- जैन साधना पद्धति में तपोयोग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। तपोयोग का एक प्रकार है- ध्यान । ध्यान साधनानवनीत है। पूर्वाजित कर्म को क्षय का अचूक उपाय ध्यान शक्ति है। ध्यान से शारीरिक, मानसिक भावनात्मक स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकते हैं । ध्यान स्वभाव परिवर्तन की प्रक्रिया है । ज्ञान चंचल है ध्यान स्थित है। ध्यान यज्ञ है। ध्यान निर्विचारता की स्थिति है। ध्यान में एक ध्यान प्रेक्षा ध्यान है। प्रेक्षा ध्यान का अर्थ को गहराई से देखना। हम दूसरे को देखते हैं। लेकिन दूसरों को देखने की बजाय अपने आप को देखना ही सही है। मुनिने आगे कहा प्रेक्षाध्यान हमारे प्राचीन ग्रंथों, आधुनिक विज्ञान और अनुभव का समन्वय है। प्रेक्षाध्यान हमारे विचारों और चेतना को शुद्ध करने का अभ्यास है, तथा आत्मसाक्षात्कार की एक प्रक्रिया है। प्रेक्षाध्यान केवल आंख मूदने की प्रक्रिया नही बल्कि खोलने की प्रक्रिया है। प्रेक्षाध्यान के चार चरण है कायोत्सर्ग, अन्तयात्रा, श्वासं प्रेक्षा, ज्योति केन्द्र प्रेक्षा । ध्यान से पूर्व की तैयारी में आसन, मुद्रा संकल्प का भी अपना महत्व होता है। कायोत्सर्ग प्रेक्षा ध्यान की पृष्ठभूमि है। अंतर्यात्रा का जागरण का उपाय में श्वासप्रेक्षा। एकाग्रता का आधार है ज्योति केन्द्र से शीतलता प्राप्त होती है। मुनिने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराया। मुनि परमानंदजी, मुनि कुणाल कुमारजी ने क्रमशः विचार व गीत प्रस्तुत किया। स्वागत भाषण ममता मूथा ने किया।

> ❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।
>
> — आचार्य श्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 17वें महाप्रयाण दिवस पर विविध कार्यक्रम

विलेपार्ले, मुंबई

आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी राकेशकुमारीजी आदि ठाणा 4 के पावन सानिध्य में विलेपार्ले गोंयल भवन में तेयुप के तत्वावधान में आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का 17 वां महाप्रयाण दिवस मनाया गया। तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी राकेश कुमारीजी ने प्रेक्षाप्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञजी को श्रद्धासुमन अर्घ्य चढ़ाते हुए सामूहिक गीत प्रस्तुत करते हुए कहा-अतीन्द्रिय ज्ञान के धनी युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की यशोमय यशकीर्ती गौरव गाथा सौरभ विश्व को सुरभित करती रहेगी। सदिया-२ यशकीर्ती की पताकाए फहराती रहेगी और यशोगाथाएं ब्रह्माण्ड में अनुगुंजित होती रहेगी।

साध्वी श्री ने आगे कहा- आज उनका पार्थिव शरीर हमारे बीच नहीं है पर ज्ञानशरीर, यशशरीर अनुभव शरीर आज भी जीवित है। आप एक सिद्ध पुरुष थे। अपने उदात्त व्यक्तित्व, यशस्वी कर्तृत्व तथा साधना की तेजस्विता की स्याही विश्व के भाल पर जो आलेख लिखे उन पर समग्र विश्व को गौरव व गर्व की अनुभूति होती है और ज्ञान की रश्मीया से सम्पूर्ण विश्व लाभान्वित हो रहा है। साध्वी मलयाविभाजी ने जीवन के मधुर संस्मरणों को उजागर करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा के जीवंत पर्याय थे। भीतर में करुणा का दरिया छलकता था। साध्वीजी ने आचार्य महाप्रज्ञजी के अनेक प्रसंगों पर प्रकाश डालते हुए कहा- वे विश्व की अनमोल धरोहर थे। देश के महान दार्शनिक वैज्ञानिक व अध्यात्म के भाष्यकार थे। साध्वी चेतस्वी प्रभाजी ने मधुर गीत की प्रस्तुति दी। तेयुप अध्यक्ष महेन्द्र नें आचार्यश्री को विश्व के महान प्रभावशाली आचार्य बताते हुए सद्भासुमन अर्पित किए। साध्वी विपुलयशाजी ने कुशलता से मंच का संचालन करते हुए अपने भावों को प्रकट किया।

तिंडीवणम

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सोमयशा जी ठाणा-3 के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 17 वाँ महाप्रयाण दिवस मनाया गया, साध्वी सोमयशाजी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा आचार्य महाप्रज्ञजी का जीवन विलक्षण था, महाप्रज्ञ दिव्यपुरुष, योगी पुरुष एवं मानवता के मसीहा थे, उनका जीवन आलोक रश्मियों से सराबोर था, आपका मन स्थिरप्रज्ञ था तो विचार चलती फिरती प्रज्ञा का शब्दकोश आपका जीवन करुणा से ओतप्रोत था साहित्य का विरल संसार, कृतज्ञता और समर्पण आपके हृदय में अनुगुम्फित था और आचार्य श्री तुलसी– महाप्रज्ञ से जीवन की कुछ समानता के बारे में बताया, डॉ. साध्वी सरलयशा जी ने आचार्य महाप्रज्ञ के अवदानों के बारे में विस्तार से अवगत करवाया, साध्वी ऋषिप्रभा जी ने महाप्रज्ञ शब्द के बारें में बताया महाप्रज्ञजी विद्वताभरे रोचक प्रसंग बतायें, आचार्य महाप्रज्ञ एक व्यक्ति थे पर उनके रूप अनेक थे कभी वे आचार्य भिक्षु के विचारों को युगीन भाषा में प्रस्तुति देते नजर आते तो कभी आचार्य तुलसी के भाव्यन्तर बनकर मुखर होते तो कभी उनका दार्शनिक रूप सामने आता तो कभी वे महान साहित्यकार के रूप में उभरते कभी जीने की कला का बोध देते तो कभी वे ग्रहयोग की प्रभावक्ता करते। तिन्डीवनम के भाई-बहनों ने बडे उत्साह के साथ भाग लिया महाप्रयाण के आयोजन के उपलक्ष में दस प्रत्याख्यान करवाया गया।

लिम्बायत, सुरत

आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या डॉ.साध्वी परमयशाजी के सान्निध्य में 'आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 17 वां महाप्रयाण दिवस' का समायोजन हुआ। डॉ.साध्वी परमयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा की आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी अध्यात्म के मणिदीप थे, पूज्यपाद का जीवन दर्शन अध्यात्म+विज्ञान का जीता जागता संस्करण था। परम पावन ने समग्र जीवन निर्माण के नित नये ज्योति कलश छलकाए।

देश समाज परिवार के अभ्युदय के नवोन्मेष प्रदान किए । नया मानव नया विश्व गुरुदेव के सपनों का स्वर्णिम अध्याय है। 'परिवार के साथ कैसे रहे' गुरुदेव ने इस पुस्तक में नए मनुष्य के जन्म का , स्वस्थ परिवार, स्वस्थ समाज का आध्यात्मिक रसायन दिया है । इस रसायन में जीवन की समरसता का पाथेय प्रोत्साहन और प्रेरणा है। आपने कहा कि- हर पल भागता जा रहा है आदमी कही चैन न पाए आदमी तनाव इतना है जिंदगी में कि खुद से ही घबराए आदमी। अपने सिर पे गठरी दुःखो की उठाए फिरता है आदमी। दुख को सुख में परिवर्तन करने का सुपर फॉर्मूला दिया प्रेक्षाध्यान का। गुरुदेव एक विशिष्ट प्रवचनकार थे। पूज्यप्रवर की प्रवचनशैली ने सबको मंत्रमुग्ध बना दिया। 166 देशों के लोग जिन्हें टी.वी. पर सुनकर प्रेरणा पाथेय प्राप्त करते। आचार्य महाप्रज्ञ एक युगप्रधान आचार्य थे। वे भिक्षु के भाष्यकार थे। उनका सब कुछ पूर्व था अलभ्य था अगम्य था। वे एक महान परिव्रजक थे। अहिंसा यात्रा से गुरुवर ने भारत भूमि के विभिन्न अंचलों में ज्ञान की गंगोत्री,दर्शन की दीप्ति, चारित्र की चिन्मय लौ एवं वीर्याचार का वैभव सम्पन्न दृष्टियां दी। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी जी के नमस्कार महामंत्र से हुई उसके पश्चात् साध्वी कुमुद प्रभाजी ने महाप्रज्ञ अष्टकम् से मंगलाचरण किया।

कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल ने भाष्यकार भारत भूमि के अलबेले युगदृष्टा' गीत का मधुर संगान किया। कार्यक्रम में तेरापंथ कन्या मंडल ने तुलसी के भाष्यकार संघ सितारे' गीत का संगान किया। तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष धीरज भलावत, मंत्री संजय सुतरिया, सहमंत्री राहुल चोरड़िया ने 'कालू करुणा से धन्य बना - तुलसी चरणों कृत्यपुन्य बना' गीत का संगान किया।

कार्यक्रम में साध्वी परिवार द्वारा 'महाप्रज्ञ में प्रतिबिम्बित है जैनाचार्यो की छवि ' रोचक प्रोग्राम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के नन्हे- नन्हे बच्चों ने महाप्रज्ञ साहित्य एक्सप्रेस के द्वारा wonderfull, the best performance प्रस्तुत किया। तेरापंथ महिला मंडल ने 'महाप्रज्ञ को नमन हमारा' प्रोग्राम की the beautifull performance प्रस्तुत की।

महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस पर सभा अध्यक्ष लालचंद चोरड़िया ने पधारे हुए सभी मेहमानों का स्वागत, अभिनंदन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी विनम्रयशाजी ने किया। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन सभाध्यक्ष लालचंद चोरड़िया ने किया।

संबोधि

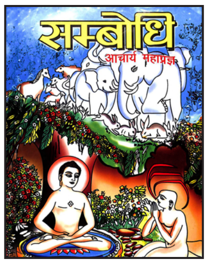

परिशिष्ट

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

सालंबन और निरालंबन ध्यान को समझने से पूर्व हमें यह जान लेना चाहिए कि ध्यान प्रशस्त भी होता है और अप्रशस्त भी, शुभ भी होता है और अशुभ भी। यह महावीर की अपनी विशिष्ट देन है। ध्यान प्राणीमात्र में होता है। मनुष्य उसकी अभिव्यक्ति का मुख्य केन्द्र है, जिसमें ध्यान की सर्वोच्च योग्यता है। परमात्मा का द्वार यदि किसी के लिए खुला है तो वह मानव मात्र के लिए है। ध्यान उसका अनन्यतम साधन है। मनुष्येतर प्राणियों में ध्यान की सर्वोच्चता संभव नहीं है और ध्यान का अप्रशस्तरूप भी इतना स्पष्ट अभिव्यक्त नहीं होता। यहां ध्यान से प्रशस्त शुभ ध्यान का अभिप्रायः है। लेकिन अप्रशस्त-अशुभ भी ज्ञेय है। अप्रशस्त का त्याग प्रशस्त को स्वतः उजागर कर देता है।

अप्रशस्त-अशुभ ध्यान दो हैं-आर्त्त और रौद्र। आर्त्त का अर्थ है-दुःखित होना। चेतना की बहिर्गामी प्रवृत्ति दुःख उत्पन्न करती है। प्राणियों का बाहर से सम्बन्धित होना दुःख है। ये दोनों अज्ञान-जनित हैं। अज्ञान के कारण ही प्राणी दूसरों को स्व मानते हैं। वियोग और संयोग से प्रसन्न तथा अप्रसन्न बनते हैं। जब जीवन पर निर्भर हो तब अशांति न हो यह कैसे शक्य हो सकता है? आर्त्त ध्यान के कारणों से यह स्पष्ट हो जाता है-

(१) प्रिय वस्तु के वियोग से होने वाला मानसिक कष्ट।

(२) अप्रिय वस्तु के संयोग से उत्पन्न चित्त कदर्थन ।

(३) रोग-शमन की आकांक्षा।

(३) ऐहिक तथा पारलौकिक विषयों की लोलुपता ।

साधारण तथा व्यक्त या अव्यक्त रूप से समस्त प्राणी-जगत् में इनका दर्शन होता है। वशिष्ठ जैसे ऋषि भी पुत्र शोक में विह्वल हो जाते हैं। लक्ष्मण ने यह देखकर राम से पूछा वशिष्ठ को कैसे शोक है? राम कहते हैं-लक्ष्मण इसमें क्या आश्चर्य है? जिसे ज्ञान है उसे अज्ञान भी है। तुम ज्ञान और अज्ञान दोनों के पार जाओ। कांटे से कांटा निकाला जाता है और फिर दोनों को फेंक दिया जाता है। प्रिय-वियोग की यह स्थिति है, वैसे ही अप्रिय-संयोग की है। जो हम नहीं चाहते. उसका मिलन भी विषाद उत्पन्न करता है। रोग जीवैषणा पर प्रहार है, अप्रिय है। उसे भी समत्वपूर्वक सहना कठिन है। बड़े-बड़े व्यक्तियों का धैर्य विचलित हो जाता है। विषयों के आकर्षण और विकर्षण-यह चाहिए और यह नहीं चाहिए की व्यथा भी क्या कम है ?

रौद्र ध्यान

रौद्र शब्द का अर्थ है-क्रूरता। जिसका आशय-चित्त क्रूर होता है, जो प्रतिशोध का भाव रखता है, हिंसा की भाव-धारा सतत बहती रहती है, दूसरों को गिराने, कुचलने में जिसे रस रहता है। असत्य, चोरी, संग्रह, दूसरों को ठगने में जो कुशल होता है, वह रौद्र ध्यान का अधिकारी है। इसमें चित्त की भयंकर विलक्षणता रहती है। मनुष्य अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए क्या अकार्य आज नहीं करता ? आजीविका के लिए जिन अनैतिक कार्यों की बात सुनते हैं, पढ़ते हैं वह सब धनलिप्सा का क्रूरतम परिणाम है। इसी प्रकार राजनैतिक क्षेत्र में सत्ता को बनाये रखने के लिए, तथा उसे समाप्त करने के लिए अनवरत चिंतन और निकृष्टतम उपायों का प्रयोग क्या चित्त की कलुषता के द्योतक नहीं हैं?

असत्य के लिए हिटलर प्रसिद्ध है, जिसने एक सूत्र का प्रयोग किया और कहा-'एक झूठ को बार-बार दोहराने से वह भी सत्य जैसा प्रतीत होने लगता है।' झूठ कैसे बोलना ? हिंसा कैसे करनी ? चोरी का आयोजन कैसे करना ? आदि-आदि प्रवृत्तियों में जो चिंतन, एकाग्रता है वह सब रौद्र ध्यान का परिणाम है। इनमें परिणामों की क्लिष्टता अनवरत चलती रहती है। वह शांत नहीं होती। एक पिता मरणासन्न था। पुत्र पास खड़े थे। उसने कहा बस एक इच्छा है। क्या तुम उसे पूरी करोगे? वचन दो। पिता की प्रवृत्ति से सब परिचित थे। सब मौन खड़े रहे। सबसे छोटे पुत्र ने कहा-पिताजी, कहिए, मैं पालन करूंगा। पिता ने कहा-मेरे मरने पर शरीर के टुकड़े कर थाने में सूचना देना कि अमुक पड़ोसी ने मेरे पिता को जीवित अवस्था में शांति से नहीं रहने दिया और मरने पर भी उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। (क्रमशः)

श्रमण महावीर

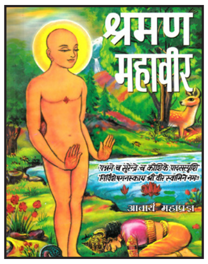

चक्षुदान

भगवान ने मौन-भंग करते हुए कहा- 'बोलो मेघ! क्या चाहते हो?'

'भंते! आपकी शरण चाहता हूं, और कुछ नहीं चाहता।'

'मूर्च्छा में तो नहीं कह रहे हो?'

'भंते! प्रत्यक्ष दर्शन के बाद मूर्च्छा कहां?'

'तो अटल है तुम्हारा निश्चय?'

'भंते ! अब टलने को अवकाश ही कहां है? आपने बाहर जाने का दरवाजा ही बंद कर दिया।'

भगवान ने मेघ को अर्थभरी दृष्टि से देखा। वह धन्य हो गया। उसकी चेतना अपने अस्तित्व में लौट आई। उसका हृदय-कोश शाश्वत ज्योति से जगमगा उठा।

वह मन ही मन गुनगुनाने लगा-

'बहुत लोग नहीं जानते-
मैं पूरब से आया हूं कि पश्चिम से?
दक्षिण से आया हूं या उत्तर से?
दिशा से आया हूं या विदिशा से?
ऊपर से आया हूं या नीचे से?
भगवान ने मुझे ढकेला अतीत के गहरे में,
मैं देख आया हूं, मेरा पहला पड़ाव।
भंते। वह द्वार भी खोल दो,
मैं देख आऊं मेरा अगला पड़ाव।

समता के तीन आयाम

हमारे जगत् का मूल एक है या अनेक ? एकता मौलिक है या अनेकता? दृश्य जगत् बिम्ब है या प्रतिबिम्ब? ये प्रश्न हजारों-हजारों वर्षों से चर्चित होते रहे हैं। इनमें से दो प्रतिपत्तियां मुख्य हैं-एक अद्वैत की और दूसरी द्वैत की। वेदान्त की प्रतिपत्ति यह है कि जगत् का मूल एक है। वह चेतन, सर्वज्ञ और सर्वेश्वर है। उसकी संज्ञा ब्रह्म है। एकता मौलिक है, अनेकता उसका विस्तार है। हमारा जगत् प्रतिबिम्ब है। बिम्ब एक ब्रह्म ही है। एक सूर्य हजारों जलाशयों में प्रतिबिम्बित होकर हजार बन जाता है। प्रातःकाल सूर्य की रश्मियां दूर-दूर फैलती हैं, सांझ के समय वे सूर्य की ओर लौट आती हैं। यह जगत् ब्रह्म की रश्मियों का फैलाव है। यह लौटकर उसी में विलीन हो जाता है।

सांख्य की प्रतिपत्ति यह है कि जगत् के मूल में दो तत्त्व हैं- प्रकृति और पुरुष (आत्मा)। प्रकृति अचेतन है और पुरुष चेतन। पुरुष अनेक हैं, इसीलिए एकता मौलिक नहीं है। चेतन और अचेतन में बिम्ब और प्रतिबिम्ब का सम्बन्ध नहीं है।

महावीर की प्रतिपत्ति इन दोनों प्रतिपत्तियो से भिन्न है। उनका दर्शन है कि विश्व का कोई भी तत्त्व या विचार दूसरों से सर्वथा भिन्न नहीं है। इस अर्थ में उनकी प्रतिपत्ति दोनों से अभिन्न भी है। महावीर ने बताया कि अस्तित्व एक है। उसमें चेतन और अचेतन का विभाजन नहीं है। उसमे केवल होना ही है। वहां होने के साथ कोई विशेषण नहीं जुड़ता। जहां केवल होना है, कोरा अस्तित्व है, वहां पूर्ण अद्वैत है। अस्तित्व की एकता के बिन्दु पर महावीर ने अद्वैत का प्रतिपादन किया। विश्व में केवल अस्तित्व की क्रिया होती तो यह जगत् होने के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। पर उसमें अनेक क्रियाएं और उनकी पृष्ठभूमि में रहे हुए अनेक गुण हैं। एक तत्त्व में चैतन्यगुण और उसकी क्रिया मिलती है। दूसरे तत्त्व में वह गुण और उसकी क्रिया नहीं मिलती। गुण और क्रिया की विलक्षणता के बिन्दु पर महावीर ने द्वैत का प्रतिपादन किया। महावीर न द्वैतवादी हैं और न अद्वैतवादी। वे द्वैतवादी भी हैं और अद्वैतवादी भी हैं। उनके दर्शन में विश्व का मूल एक भी है और अनेक भी है। अस्तित्व जैसे व्यापक गुण की दृष्टि से देखें तो एकता मौलिक है। चैतन्य जैसे विलक्षण गुण की दृष्टि से देखें तो अनेकता मौलिक है। निष्कर्ष की भाषा में कहें तो एकता भी मौलिक है और अनेकता भी मौलिक है। (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ में आचार्य पदारोहण : एक पर्यवेक्षण

इस प्रकार डालगणी पूर्व आचार्य द्वारा घोषित आचार्य नहीं, संघ द्वारा स्थापित आचार्य हुए। वे माणकगणी से दीक्षापर्याय में ज्येष्ठ थे।

पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी तेरापंथ के नौवें आचार्य रहे हैं। उन्होंने अपने जीवनकाल में ही विक्रम संवत् २०३५ में मुनि श्री नथमलजी (महाप्रज्ञ) को अपना युवाचार्य घोषित किया। यह संघ को साधारण परम्परा के अनुरूप कार्य था। वि. सं. २०५० सुजानगढ़ में मर्यादा-महोत्सव के दिन मुख्य कार्यक्रम में गुरुदेव ने युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य घोषित किया, स्वयं आचार्यपद से मुक्त बने। यह घोषणा तेरापंथ की सामान्य परम्परा से हटकर थी। सामान्य परम्परा के अनुसार पूर्व आचार्य के देहावसान के बाद युवाचार्य आचार्य बनता है। आचार्य की घोषणा के साथ ही श्री महाप्रज्ञ तेरापंथ के दसवें आचार्य हो गए! आचार्य पदाभिषेक समारोह वि. सं. २०५१ माघ शुक्ला षष्ठी को दिल्ली में मनाया गया। धर्मसंघ को एक दार्शनिक, मनीषी एवं विभिन्न विशेषताओं से सम्पन्न एक महान् व्यक्तित्व का नेतृत्व प्राप्त हो रहा है। धर्मसंघ में अध्यात्म के नए कीर्तिमान स्थापित हों, उसका श्रेय पूज्यश्री को प्राप्त हो, मंगल कामना।

अनुशासन का प्रतीक : मर्यादा-महोत्सव

हिन्दुस्तान के इतिहास में १५ अगस्त एवं २६ जनवरी महत्त्वपूर्ण दिन हैं। १५ अगस्त को भारत स्वतंत्र हुआ एवं २६ जनवरी को उसका संविधान प्रभावी हुआ। तेरापंथ के इतिहास में आषाढ़ी पूर्णिमा एवं माघ शुक्ला सप्तमी का बहुत बड़ा संघीय महत्त्व है। विक्रम संवत् १८१७ आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन तेरापंथ संघ की स्थापना हुई एवं वि. सं. १८५९ माघ शुक्ला सप्तमी को इसका एक लिखत (एक विशेष मर्यादा पत्र अथवा संविधान) लिखा गया। उसी के उपलक्ष में प्रतिवर्ष मर्यादा-महोत्सव मनाया जाता है। प्रथम मर्यादा-महोत्सव श्रीमज्जयाचार्य ने वि. सं. १८२१ में बालोतरा 'मारवाड़' में मनाया था।

महामना आचार्य भिक्षु ने शताब्दीद्वय पूर्व तत्कालीन साधु-समाज को परखा, साधना में आने वाले विघ्नों को पहचाना और उन्होंने पाया कि कुछ मर्यादाएं अनिवार्य हैं जिनके भीतर रहता हुआ साधक साधना में आने वाले अनेक अवरोधों से बच सकता है। उन्होंने मर्यादा के रूप में कुछ लक्ष्मण-रेखाएं खींचीं। यह कहा जा सकता है तेरापंथ के विकास में आचार्य भिक्षु की उन मौलिक मर्यादाओं का बहुत बड़ा हाथ है। तेरापंथ की मौलिक मर्यादाएं इस प्रकार हैं-

- सर्व साधु-साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में रहें।
- विहार, चतुर्मास आचार्य को आज्ञा से करें।
- अपने शिष्य न बनाएं।
- आचार्य अपने गुरु भाई या शिष्य को उत्तराधिकारी चुने तो सब साधु-साध्वियां उसे सहर्ष स्वीकार करें।
- गण के पुस्तक-पन्नों आदि पर अपना अधिकार न करें।
- गण से बहिष्कृत या बहिर्भूत व्यक्ति से संस्तव न करें।
- पद के लिए उम्मीदवार न बने।

कुछ वर्षों पूर्व आचार्य श्री तुलसी ने एक प्रेरक घोष दिया था- 'निज पर शासन-फिर अनुशासन' यह सूत्र अनुशास्ता की अर्हता को प्रकट करता है। औरों पर अनुशासन करने के लिए आवश्यक है पहले स्वयं पर अनुशासन करना। जो स्वयं अच्छा शिष्य होता है वही अच्छा शास्ता बन सकता है। तेरापंथ के द्वितीय आचार्य श्री भारमलजी स्वामी अनुशास्ता बनने से पहले अपने गुरु आचार्य श्री भिक्षु के सुशिष्य बने और उनके कठोर अनुशासन में रहे। तभी तो उनका जीवन स्वामीजी की प्रयोगशाला थी। आचार्य श्री भिक्षु संघ में कोई भी नियम लागू करते तो उसका प्रथम प्रयोग भारमलजी पर करते जिसका परिणाम होता अन्य मुनियों में सजगता वृद्धि।

रात को स्वाध्याय के समय भारमलजी स्वामी को नींद आती तो उन्हें खड़े-खड़े स्वाध्याय करने का निर्देश मिलता और वे खड़े-खड़े हजारों पद्यों का स्वाध्याय करते। इन घटनाओं से यह स्पष्ट है कि अनुशासन को पालने वाले व्यक्ति ही योग्य अनुशास्ता बन सकते हैं।

आचार्य मघवा तेरापंथ के पांचवें आचार्य थे। लघुवय में ही उन्होंने अपने गुरु श्रीमज्जयाचार्य का विश्वास एवं कृपाभाव प्राप्त किया। कोमलता, विनम्रता उनके जीवन की पहचान थी। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अप्रैल 2026
सप्ताह के विशेष दिन

28 अप्रैल भगवान विमलनाथ च्यवन कल्याणक	**29 अप्रैल** भगवान अजितनाथ च्यवन कल्याणक
30 अप्रैल आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस)	**01 मई** पक्खी

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 अप्रैल - 26 अप्रैल 2026

अक्षय तृतीया पर विशेष आलेख

पराक्रम का पर्व - अक्षय तृतीया

● मुनि अनंत कुमार ●

भारतीय संस्कृति में अनेक पर्व-त्योहार मनाए जाते हैं। उन पर्वों में एक विशिष्ट पर्व है अक्षय तृतीया, जिसे हम जनभाषा में 'आखातीज' के नाम से भी जानते हैं। अक्षय तृतीया के साथ कुछ ऐतिहासिक घटनाएं भी जुड़ी हुई हैं, जो इस प्रकार हैं:

- वर्ष भर में 4 दिवसों को 'अबूझ मुहूर्त' के रूप में स्वीकार किया गया है, उनमें एक अक्षय तृतीया है।
- आखातीज को किसानों की दीवाली कहा जाता है।
- युधिष्ठिर को अक्षय पात्र मिला, वह शुभ दिन अक्षय तृतीया था।
- दुशासन द्वारा द्रौपदी का चीरहरण किया गया, तब द्रौपदी को श्रीकृष्ण द्वारा अक्षय वस्त्र मिला; वह दिन अक्षय तृतीया का था।
- सगर राजा के प्रपौत्र भगीरथ ने पृथ्वी पर गंगा प्रवाहित की, वह दिन अक्षय तृतीया का था।
- वेदव्यास जी ने महाभारत लेखन कार्य का प्रारंभ अक्षय तृतीया के दिन ही किया था।
- कृष्ण-सुदामा के पुनः मिलन का पवित्र दिन अक्षय तृतीया था।
- अक्षय तृतीया के दिन ही रथ यात्रा के रथ निर्माण का कार्य शुरू किया जाता है।
- बद्रीनाथ तीर्थ-धाम के कपाट अक्षय तृतीया के दिन से ही खुलते हैं।

जैन परंपरा में आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की लगभग तेरह महीनों की तपस्या का पारणा उनके प्रपौत्र श्रेयांस के द्वारा हुआ, वह पवित्रतम दिवस अक्षय तृतीया है। जैन धर्म में अक्षय तृतीया का पर्व भगवान ऋषभ की तपस्या के साथ जुड़ा है। सभी भारतीय दर्शनों में तप को करणीय अनुष्ठान के रूप में स्वीकार किया गया है। अन्य क्रियाओं में मतभेद दिख सकता है, परंतु तप को सबने निर्विवाद 'सोना' बताया है। तपस्या कोई भी करे, उसका प्रभाव अवश्य पड़ता है। मोक्षमार्ग चार प्रकार से मिलते हैं: पहला है ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप। दूसरा प्रकार है दान-शील-तप और भाव। दोनों में तप मुख्य तत्व है। इससे ही हम तप का महत्व समझ सकते हैं। तप केवल तपस्वी की तासीर और तस्वीर ही नहीं बदलता, बल्कि तकदीर बदलने में भी सहायक बनता है। मेरा मानना है कि आठ दिनों की तपस्या करना आसान है, परंतु वर्षीतप करना अति दुरुह है। वर्ष भर में ठंड, गर्मी आदि अवसरों में स्वयं को सतत तप में लगाए रखना प्रबल पराक्रम का कार्य है। कहते हैं संवत् प्रवर्तक सम्राट विक्रमादित्य के जीवन का एक प्रसंग है—एक शाम उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा की खातिर 'दरिद्रनारायण' की मूर्ति खरीदकर राजमहल में रख दी। मानो भूकंप आया हो, वैसे ही प्रथम रात्रि के प्रथम प्रहर में लक्ष्मी देवी आईं और कहा, 'मैं दरिद्रनारायण के साथ नहीं रह सकती, अतः जा रही हूँ।' सम्राट ने कोई आजीजी नहीं की, न हाथ जोड़कर रहने को कहा; उन्हें जाने दिया। दूसरे प्रहर में सरस्वती ने और तीसरे प्रहर में कीर्ति देवी ने विदा ली। रात्रि के अंतिम प्रहर में जब पराक्रम के देवता विदा होने को तैयार हुए, तब विक्रमादित्य ने छलांग लगाकर ललकारा—'पहले मुझसे युद्ध करो, मुझे परास्त करो, फिर जा सकते हो।' राजा के शौर्य पर पराक्रम देवता मुग्ध हो गए और सोचने लगे—'मेरी विदा के समय ऐसा पराक्रम!' वह वहीं रुक गए। कुछ ही समय में लक्ष्मी, सरस्वती व कीर्ति तीनों देवियाँ भी पुनः लौट आईं। अतः जहाँ सत्त्वशीलता और पराक्रमशीलता होती है, वहाँ अशक्य लगने वाले कार्य भी शक्य बन जाते हैं। वर्षीतप की साधना वाले तपस्वी सार्थक जीवन में ऐसा पराक्रम दिखाकर ही वर्षीतप को पूर्ण कर पाते हैं। वर्षीतप वही पराक्रमी कर सकता है जो अपनी रसनेन्द्रिय पर स्वयं नियंत्रण रखता है। वरना उस सेठ जी की तरह हम अधिकतर रसनेन्द्रिय के दास बन जाते हैं। एक सेठ के पुत्र की सगाई हुई। पहली बार सपरिवार अपने संबंधी के यहाँ गए। संबंधी जी ने आग्रह करके भोजन करवाया। जब एक और रोटी की मनुहार की, तो सेठ ने कहा—'अब पेट भर गया है, बिल्कुल जगह नहीं है।' इतने में एक व्यक्ति गुलाब जामुन ले आया। संबंधी जी ने मनुहार की, तो सेठ जी 5-7 गुलाब जामुन खा गए। संबंधी जी ने कहा—'सेठ जी! आप तो कह रहे थे पेट में बिल्कुल जगह नहीं है, फिर ये गुलाब जामुन कैसे खा लिए?' सेठ जी ने कहा—'देखो, बस में सब पैसेंजर से सीटें फुल हो जाएँ, तो भी कंडक्टर की जगह तो हो ही जाती है।' सचमुच पांच इन्द्रियों में रसनेन्द्रिय को जीतना सबसे मुश्किल है। इसी भावना को उपाध्याय विनय विजय जी ने 'शांत सुधारस' काव्य में कहा है–

शमयति तापं गमयति पापं रमयति मानस हंसम्।
हरति विमोहं, दुरारुहं, तप इति विगता संशम्।।

भगवान ऋषभ द्वारा की गई वर्ष भर की तपस्या के उपलक्ष्य में आज भी जैन समाज में हजारों लोग वर्ष भर तक एकांतर तप करके वर्षीतप की साधना करते हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में परम पूज्य आचार्य प्रवर के सानिध्य में सैकड़ों लोग अपने वर्षीतप का समापन करते हैं। ऐतिहासिक अक्षय तृतीया का पर्व हमें तीन संदेश देता है:

1. अज्ञान दशा में या हँसते-हँसते किए कार्यों से भी भयंकर कर्म बँध सकते हैं। जैसे भगवान ऋषभ के आदेश से बैलों को चार प्रहर तक खाने में अंतराय आई, फलस्वरूप भगवान ऋषभ को 400 दिन तक आहार प्राप्त नहीं हुआ।
2. कर्म तीर्थंकर को भी नहीं छोड़ते—कर्म तटस्थ हैं, सबके साथ न्याय करते हैं। तीर्थंकरों को भी रियायत नहीं है, तो हमारा अस्तित्व ही क्या है। अतः हम कर्म करते समय सावधान रहें। शुभ कर्मों का उत्कृष्ट फल तीर्थंकर पद की प्राप्ति है, तो अशुभ कर्मों से भारी अंतराय कर्म भी बँध सकते हैं।
3. कर्म के परिणाम को समभाव से सह लेना—भगवान ऋषभ प्रतिदिन गोचरी (भिक्षा) के लिए जाते थे। कुछ नहीं मिलता, तब भी वही प्रसन्नता बनी रहती थी। तभी तो साधुओं के लिए कहा जाता है—'भिक्षा मिले तो संयम वृद्धि, और न मिले तो तप वृद्धि।'

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर के दीक्षा प्रदाता शासन स्तंभ श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री के जीवन का भी एक पक्ष अक्षय तृतीया से जुड़ा हुआ है। मंत्री मुनि सुमेरमल जी स्वामी का देवलोक गमन भी अक्षय तृतीया के पावन दिन हुआ था। वह अपने जीवन का एक संस्मरण अंतराय से संबंधित प्रायः अक्षय तृतीया के अवसर पर सुनाते थे। वह कहते कि—हम नौ संत पंजाब की ओर साथ में विहार कर रहे थे। लंबे विहार के बाद एक छोटे से गाँव में पहुँचे। मैं गोचरी के लिए एक रावले (ठाकुर का घर) में गया। आहार की गवेषणा की, तो नई बहू आई और बड़ी भक्ति के साथ कहा—'पधारो महाराज! रोटियाँ बनी हुई हैं।' 'आप कितने संत हो?' मैंने कहा—'नौ हैं।' बहन ने बाजरे की नौ रोटियाँ उठाईं और बड़ी भावना से देने को तैयार हुई। मैंने भी सोचा कि थकान है, चलो आहार तो मिला। जब मैंने लेने के लिए पात्र निकाला, तब बहन स्वतः बोलने लगी कि 'आप सूखी रोटी कैसे खाएँगे?' पास में कच्चे प्याज पड़े थे, उनमें से दो-तीन उठाए और रोटियों पर रखते हुए बोली—'लो बाबा जी! प्याज के साथ खा लेना।' मंत्री मुनिश्री फरमाते कि ऐसी अंतराय भी आती है, यह उस दिन अनुभव किया। अतः वर्षीतप करने वाले हर साधक के लिए यह संदेश मिलता है कि हमारी तपस्या भौतिक उद्देश्य के साथ न हो, प्रशंसा और सम्मान के लिए न हो। हमारी तपस्या में अहंकार और आडंबर न हो। ऐसा दुरुह वर्षीतप करने वालों के प्रति बारंबार अनुमोदना।

अक्षय तृतीया और भगवान ऋषभ

● मुनि जिनेश कुमार ●

भारतीय पर्वों की श्रृंखला में एक विशिष्ट पर्व है अक्षय तृतीया। अक्षय तृतीया एक मांगलिक पर्व है। यह दिन विवाह, गृहप्रवेश आदि मांगलिक कार्यों के लिए शुभ माना जाता है। इस दिन किसान खेतों में हल चलाकर कृषि कार्यों का प्रारंभ करते हैं। यह पर्व दीपावली व होली की तरह जनमानस में प्रतिष्ठित है। अक्षय तृतीया 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' की अनुभूति का विलक्षण पर्व है। जैन धर्म में अक्षय तृतीया आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभ के पारणे से जुड़ा हुआ है। भगवान ऋषभ 24 तीर्थंकरों में प्रथम तीर्थंकर हुए हैं। वे सभ्यता और संस्कृति की विकास यात्रा के पुरोधा तथा कर्मयुग और धर्मयुग के प्रणेता थे। वे असि, मसि और कृषि के मंत्रदाता थे। वे युगदृष्टा, युगसृष्टा और युगपुरुष थे। उन्होंने संसार व संन्यास का जीवन जीकर कर्म-बंधन व कर्म-मुक्ति का राज प्रकट किया। भगवान ऋषभ का जन्म इक्ष्वाकु वंश में हुआ। उनकी माता का नाम मरुदेवा व पिता का नाम नाभि था। उनका चिह्न वृषभ और वर्ण स्वर्ण था। जब वे सांसारिक कर्तव्यों को पूर्ण कर चुके, तब उन्होंने प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर प्रस्थान किया। उन्होंने चैत्र कृष्णा नवमी के दिन जैन दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के पश्चात् अंतराय कर्म के उदय से उन्हें एक वर्ष से भी अधिक समय तक शुद्ध भिक्षा प्राप्त नहीं हुई। विचरण करते-करते प्रभु हस्तिनापुर पधारे। वैशाख शुक्ला तृतीया के दिन प्रभु भिक्षा हेतु राजमार्ग से पधार रहे थे। उसी समय श्रेयांस कुमार ने प्रभु को देखा और उन्हें 'जाति स्मरण ज्ञान' हुआ। श्रेयांस कुमार ने प्रभु से भिक्षा के लिए निवेदन किया और उन्हें इक्षुरस (गन्ने का रस) का दान दिया। श्रेयांस कुमार के हाथों प्रभु के कठोर तप का पारणा हुआ। वह दान 'अक्षत' बन गया और वह तृतीया 'अक्षय' बन गई। तप धर्म साधना का प्राण तत्व है। निष्काम तप चेतना को निर्मल बनाता है। वर्षीतप की आराधना करने वाले सभी तपस्वी अक्षय तृतीया के दिन इक्षुरस से पारणा कर अपने आपको धन्य महसूस करते हैं। तप से कर्मों की निर्जरा होती है और यह मोक्ष का मार्ग है।

धर्म के आदिकर्ता - भगवान ऋषभ

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

भारतीय संस्कृति धर्म प्रधान रही है। हमारे भारत वर्ष में वेद, पुराण, आगम और उपनिषद् जैसे ग्रंथों का अटूट भंडार है। इस भूमि पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लेकर पथ-प्रदर्शन किया है। जैन परंपरा के आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव हुए हैं, जिन्हें आदिनाथ के रूप में ख्याति प्राप्त है। भगवान ऋषभ का जन्म अयोध्या में माता मरुदेवा की कुक्षि से हुआ। उन्होंने आदि मानव को असि, मसि और कृषि का बोध दिया। साधना के पथ पर अग्रसर होने के बाद, भिक्षा विधि से अज्ञात होने के कारण उन्हें आहार प्राप्त नहीं हो सका। यों करते हुए उन्हें चार सौ दिन की निराहार तपस्या हो गई। अंततः वैशाख शुक्ला तृतीया के दिन उन्होंने हस्तिनापुर में श्रेयांस कुमार के हाथों इक्षुरस ग्रहण कर पारणा किया। भगवान ऋषभ की तपस्या का पारणा होने से वह तिथि युगों-युगों के लिए 'अक्षय तृतीया' के रूप में प्रसिद्ध हो गई। आज भी इस परंपरा का अनुसरण करते हुए अनेक साधक वर्ष भर की तपस्या करते हैं और गुरु सन्निधि में इक्षुरस से पारणा संपन्न करते हैं। पर्व का महत्व सामाजिक व धार्मिक दोनों दृष्टियों से है। जैन समाज को विरासत में प्राप्त इस संस्कृति को सुरक्षित रखने का दायित्व है। हमें अपनी आत्मशक्ति का समुचित उपयोग कर जीवन को उच्चता की दिशा में ले जाना चाहिए।

तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन

अहमदाबाद पश्चिम।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या साध्वी अणिमाश्री जी एवं प्रोफेसर डॉ साध्वी मंगल प्रज्ञाजी, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के निर्देशन और तेरापंथी सभा अहमदाबाद पश्चिम के तत्वावधान में आयोजित 'तेरापंथःमेरापंथ कार्यशाला में उपस्थित विशाल परिषद् को सम्बोधित करते हुए साध्वी अणिमा श्री जी ने कहा-सम्पूर्ण तेरापंथ संघ आचार्य भिक्षु के प्रति कृतज्ञ है। वे कृतज्ञता के भाव परिवार और समाज के सदस्यों में होने चाहिए। जिन बुजुर्गों ने अस्तित्व क़ायम करने के लिए संस्कार दिए हैं,उनके प्रति कृतज्ञभाव बढ़ने चाहिए। आचार्य भिक्षु द्वारा प्रदत्त तेरापंथ को उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा ने सुदृढ़ बनाया है,उस वंदनीय आर्य-श्रृंखला के प्रति तेरापंथ संघ सदैव कृतज्ञ रहेगा ।मंदिरों में जाने के बजाय आज जरूरत है घर को मंदिर बनाने की। ऐतिहासिक घटना प्रसंग का उल्लेख करते हुए साध्वी जी ने कहा-यह संघ हमारा है,हम इस संघ के वफादार सैनिक बनकर संघ सुरक्षा में अपने श्रम और समय का संयोजन करें ।महाविभूति गणपाल आचार्य श्री महाश्रमणजी की विकासमयी अनुशासना में हम सभी साधना करते रहें। इस अवसर पर अपने उद्गार में प्रोफेसर डॉ साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा-महामना आचार्य भिक्षु का व्यक्तित्व संयम से सुवासित था ।ऐसा प्रतीत होता है उस महान ज्योतिपुंज का अवतरण तेजस्विता लेकर हुआ। शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक समस्याओं के वे महासमाधायक थे। तेरापंथ का अर्थ है-आत्मा की साधना और चिंतन का उर्ध्वारोहण ।उनके सिद्धांत,विचार अनेकान्तिक थे,अनाग्रह चेतना के कार आचार्य भिक्षु लाखों शरणार्थियों के आधार बने,पथ दर्शक बने।

तेरापंथ को व्याख्यायित करते हुए,परिषद् को प्रेरणा प्रदान करते हुए साध्वीजी ने कहा-परिवार में श्रद्धा संक्रांत हो ऐसा प्रयास हर श्रावक श्राविकाओं को करना चाहिए। तत्वज्ञान रसिक बनकर आचार्य भिक्षु के सार्वभौम सिद्धांतों को आत्मसात कर जीवन पथ को आलोकित करें। महिला मंडल के मंगल संगान से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ ।स्थानीय सभा अध्यक्ष सुरेश दक ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। साध्वी कर्णिकाजी, साध्वी सुदर्शना प्रभाजी,साध्वी डॉ सुधा प्रज्ञाजी,साध्वी समत्वयशाजी,साध्वी डॉ राजुल प्रभाजी,साध्वी डॉ चैतन्य प्रभाजी और साध्वी डॉ शौर्य प्रभाजी ने 'आन ,बान ,शान है यह तेरापंथ 'गीत का समूह संगान कर वातावरण को सौम्यता प्रदान की। साध्वी डॉ राजुल प्रभाजी ने कहा-तेरापंथ में विकास के लिए विस्तृत अवकाश हे,अपेक्षा है गुरु के इंगित और आज्ञा श्री का सम्मान करते हुए हमें तेरापंथ के उपकार,आचार की परम्परा को आगे ले जाना है और ब्रांड बनकर आगे बढ़ना है, गण का नाम रोशन करना है। संयोजकीय वक्तव्य में डॉ. सुधा प्रज्ञा जी ने कहा-शुद्धाचार और आध्यात्मिक मूल्यों के लिए आचार्य भिक्षु ने क्रांति की ।जरूरत है उन मूल्यों को जीवन में उतारने की।

इस गरिमामय कार्यशाला में प्रशिक्षक के रूप में उपासक प्राध्यापक डालिमचंद नौलखा ने परिषद् को तेरापंथ दर्शन,आचार्य भिक्षु के सिद्धांत, दान-दया, साधन एवं साध्य, धर्म -अधर्म,भगवान महावीर की शास्वत वाणी का सारगर्भित विश्लेषण किया।

इस कार्यक्रम में महासभा से आंचलिक प्रभारी विनोद बोरदिया (डीसा), सभा प्रभारी अरुण बैद, महासभा कार्यसमिति सदस्य एवं तेरापंथ युवक परिषद अहमदाबाद के अध्यक्ष प्रदीप बागरेचा विशेष रूप से उपस्थित रहे।

तेरापंथ सभा पश्चिम,युवक परिषद पश्चिम एवँ महिला मण्डल के सुप्रयास से भाई बहनों की बहुत अच्छी उपस्थिति रही। सुश्रावक राजेंद्र बोथरा ने आभार ज्ञापन किया।

बोलती किताब

8 बातें ज्ञान की

ज्ञान, साधना और आत्मविकास का मार्गदर्शन

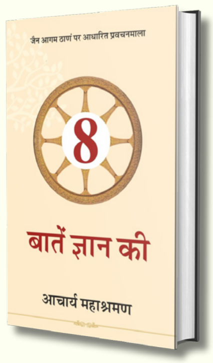

पूज्य आचार्यश्री महाहश्रमण जी की प्रेरणादायी वाणी से संकलित पुस्तक “8 बातें ज्ञान की” जैन आगम के गहन ज्ञान को सरल और प्रेरक रूप में प्रस्तुत करने वाली एक महत्त्वपूर्ण कृति है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक प्राचीन आगमिक ग्रंथ ‘ठाणं’ के आठवें स्थान में निहित सूत्रों की व्याख्या पर आधारित है। इसमें आगम के गूढ़ सिद्धांतों को सहज भाषा और जीवनोपयोगी उदाहरणों के माध्यम से समझाया गया है, जिससे पाठक केवल पढ़ता ही नहीं, बल्कि उस ज्ञान को अनुभव भी कर पाता है।

ज्ञान का सच्चा स्वरूप केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा में ले जाने वाली समझ विकसित करना है। जब मनुष्य अपने भीतर झाँकता है और जीवन के मूल्यों को पहचानता है, तभी ज्ञान का वास्तविक प्रकाश प्रकट होता है। आध्यात्मिक परम्परा में ज्ञान को आत्म-जागरण का माध्यम माना गया है, जो मनुष्य को अज्ञान, भ्रम और अशांति से निकालकर विवेक, संयम और संतुलन की ओर अग्रसर करता है।

जीवन की यात्रा में अनेक प्रकार के अनुभव और परिस्थितियाँ आती हैं, जो मनुष्य के विचारों और कर्मों को प्रभावित करती हैं। ऐसे में सही दृष्टि और सही समझ अत्यंत आवश्यक होती है। जब व्यक्ति अपने भीतर जागरूकता विकसित करता है, तो वह जीवन के विभिन्न पक्षों को संतुलित रूप से समझ पाता है। यही जागरूकता मनुष्य को आत्मअनुशासन, विवेकपूर्ण निर्णय और नैतिक जीवन की ओर प्रेरित करती है।

आध्यात्मिक चिंतन यह बताता है कि जीवन केवल बाहरी उपलब्धियों का नाम नहीं, बल्कि आंतरिक विकास का भी मार्ग है। आत्मचिंतन, संयम और साधना के माध्यम से मनुष्य अपने व्यक्तित्व को अधिक परिपक्व और शांत बना सकता है। जब ज्ञान जीवन के आचरण से जुड़ जाता है, तब वह केवल विचार नहीं रहता, बल्कि जीवन को बदलने वाली शक्ति बन जाता है।

ऐसी ही जीवन-दृष्टि मनुष्य को अपने अस्तित्व के गहरे अर्थ को समझने की प्रेरणा देती है। जब व्यक्ति ज्ञान को आत्मसात करता है, तो उसके विचारों में स्पष्टता, व्यवहार में मधुरता और जीवन में संतुलन का विकास होता है। यही ज्ञान अंततः मनुष्य को आत्मिक शांति, संतोष और सच्चे सुख की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग दिखाता है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

पृष्ठ 1 का शेष

यह भारतीय अध्यात्म की एक दुर्लभ घटना थी जब आचार्य तुलसी ने अपनी ही विद्यमानता में महाप्रज्ञजी का पट्टाभिषेक कर उन्हें शासन की बागडोर सौंपी थी।

मनिंदरजीत सिंह बिट्टा और अभातेयुप की उपस्थिति :

इस अवसर पर अखिल भारतीय आतंकवाद विरोधी मोर्चा के अध्यक्ष मनिंदरजीत सिंह बिट्टा विशेष रूप से उपस्थित हुए। उन्होंने आचार्य महाश्रमणजी के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया और अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी।

साथ ही, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद (ABTYP) द्वारा आयोजित 'उत्तरांचल सम्मेलन' का मंचीय कार्यक्रम संपन्न हुआ। परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी और युवाओं ने सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी।

साध्वी प्रमुखा श्री ने दी विनयांजलि :

साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने महाप्रज्ञजी को नमन करते हुए कहा कि वे ध्यान की ऐसी गहराइयों में उतर जाते थे जहाँ घाती कर्मों का क्षयोपशम संभव होता था। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत के माध्यम से अपनी भावांजलि अर्पित की।

युक्ति बनाम मान्यता: आग्रही व्यक्ति अपनी मान्यता सिद्ध करने के लिए तर्क गढ़ता है, जबकि निष्पक्ष व्यक्ति वहां जाता है जहाँ 'युक्ति' (सही तर्क) होती है।

2.अहिंसा और मैत्री: 'जीओ और जीने दो'

मैत्री का अर्थ:

पूज्य प्रवर ने फरमाया कि स्वयं सत्य की खोज करें और सभी प्राणियों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखें।

जीओ और जीने दो :

जीने दो : किसी के जीने में बाधा न डालें और किसी भी जीव को कष्ट न पहुँचाएँ।

जीओ : संयमपूर्वक जीवन जीना, जिसमें अहिंसा और सत्य जैसे व्रतों का पालन हो।

न्यूनतम सीमा : मैत्री की न्यूनतम सीमा यह है कि हम किसी भी जीव को मारें नहीं और न ही उसे तकलीफ देने का भाव रखें।

विशेष कार्यक्रम और प्रस्तुतियाँः

अणुव्रत पर वक्तव्य : मुख्य मुनिश्री महावीर कुमारजी ने अणुव्रत की पृष्ठभूमि, इसके उद्देश्यों और विभिन्न संस्थाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इसके बाद श्रद्धालुओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया गया।

सांस्कृतिक प्रस्तुति : नेपाल की आराध्या गोलछा ने अपनी विशेष प्रस्तुति दी।

नेपाली नववर्ष मंगलकामना : परम पूज्य गुरुदेव ने नेपाली नववर्ष के पावन अवसर पर विशेष मंगलपाठ फरमाया और नेपाल से आए हुए श्रद्धालुओं को अपना पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

विश्वशांति के लिए विराट आयोजन

तिंडीवणम।

विश्व शांति की विराट भावना से किया गया JITO संघठन के द्वारा नमस्कार महामंत्र का विराट आयोजन अनेक स्थानों पर जैन समाज द्वारा आयोजित किया गया।

इसी क्रम मे आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या साध्वी सोमयशाजी , साध्वी सरलयशाजी, साध्वी ऋषिप्रभाजी के सान्निध्य मे तिंडीवणम (तमिलनाडु) मे सकल जैन संघ द्वारा महामंत्र का अनुष्ठान किया गया। स्थानीय सभी जैन भाई बहनो ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। इस अवसर पर साध्वी सोमयशा जी ने कहा की नमस्कार महामंत्र अपने आप मे पावरफुल मंत्र है, इसके सामूहिक प्रयोग अनेक समस्याओ को सॉल्व करने वाला है।

उपस्थित श्रावकों को नमस्कार महामंत्र के बारे मे विस्तार से समझाया। डॉ.साध्वी सरलयशाजी ने कहा की विश्व शांति का उद्घोष भारतीय संस्कृति का प्राण है, आज का यह आयोजन विश्व के कोने कोने तक शांति का संदेश पहुँचाया और युद्ध की विवशता से पीड़ित लोग शांति का अनुभव करें यहीं हम सभी की मंगल कामना है।

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समभाव रखना ही वास्तविक साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

परिवार के मुखिया के लिए सफलता का सूत्र : 'कहना, सहना और शांति से रहना

लाडनूं।
09 अप्रैल, 2026

जैन विश्व भारती के पावन परिसर में स्थित सुधर्मा सभा में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'करें क्रोध का निवारण' विषय पर उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित किया। अपने प्रेरणादायी प्रवचन में आचार्यश्री ने जीवन में आने वाली अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में संतुलन बनाए रखने पर विशेष बल दिया।

साधुता की कसौटी –समभाव : आचार्यश्री ने फरमाया कि साधु जीवन में शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श की अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों संभव हैं। एक सच्चा साधु वही है जो अनुकूल भौतिक परिस्थितियों में आकृष्ट होकर पाप कर्म का बंध न करे। पूज्यप्रवर ने स्पष्ट किया कि प्रतिकूल स्थिति में क्रोध या द्वेष का आना मानवीय अपरिपूर्णता का सूचक है। जो शांत होता है, वही संत होता है; यदि कषाय (क्रोध आदि) शांत नहीं हैं, तो संतता अधूरी है।

निंदा होने पर क्या करें? : प्रवचन के दौरान आचार्यश्री ने एक व्यावहारिक दृष्टिकोण साझा करते हुए फरमाया कि यदि कोई हमारी निंदा या हम पर आक्रोश करे, तो बुद्धिमान व्यक्ति को आत्म-चिंतन करना चाहिए:
–यदि आलोचना में सच्चाई है, तो क्रोध के बजाय स्वयं का परिष्कार (सुधार) करें।
–यदि बात यथार्थ से परे है, तो व्यर्थ की बातों पर ध्यान देकर गुस्सा करना अनावश्यक है।

क्रोध मुक्ति के व्यावहारिक सूत्र : आचार्यश्री ने क्रोध के वेग को रोकने के लिए कुछ अचूक उपाय भी फरमाए:

तत्काल मौन : क्रोध आने पर वाणी का प्रयोग न करें और 10-15 मिनट का मौन धारण कर लें।

स्थान परिवर्तन : आवेश के समय उस स्थान को छोड़कर भ्रमण पर निकल जाएं।

ध्यान का प्रयोग : प्रेक्षाध्यान और अनुप्रेक्षा के माध्यम से क्रोध के मूल कारणों का निवारण संभव है।

गृहस्थों के लिए सफलता का मंत्र : पारिवारिक और सामुदायिक जीवन में शांति हेतु आचार्यश्री ने मुखिया और बड़ों के लिए विशेष सूत्र दिया। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि परिवार चलाने के लिए 'कहना, सहना और शांति से रहना' अनिवार्य है। जहाँ तक संभव हो, विवेक का प्रयोग करते हुए विवाद की स्थिति में मौन रहने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में पूज्य प्रवर ने चारित्रात्माओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया। मंगल प्रवचन के दौरान श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

> 'जो शांत होता है, वही संत होता है'
> -आचार्यश्री महाश्रमण

अध्यात्म और तप में दिखाएं पराक्रम, उद्यमी का लक्ष्मी स्वयं करती है वरण

पुरुषार्थ की शक्ति : भाग्य के भरोसे न बैठें, संयम से बदलें जीवन : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
4 अप्रैल, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने लाडनूं की पावन धरा पर 'संयम में पराक्रम' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को संबोधित किया।

आचार्यश्री ने जीवन में सफलता और शांति के लिए भाग्य (Destiny) और पुरुषार्थ (Effort) के बीच सटीक संतुलन को अनिवार्य बताया।

श्रद्धा ही पराक्रम का मूल: आचार्यश्री ने शास्त्रों का उल्लेख करते हुए फरमाया कि मनुष्य जन्म, धर्म श्रवण, श्रद्धा और वीर्य (पराक्रम) ये चार चीजें अत्यंत दुर्लभ हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि इनमें 'श्रद्धा' सबसे महत्वपूर्ण है। यदि मन में धर्म और संयम के प्रति गहरी श्रद्धा हो, तो संयम के पथ पर पराक्रम करना सहज हो जाता है। श्रद्धा के बिना किया गया पुरुषार्थ भटक सकता है।

भाग्य 'ज्ञातव्य' है, पुरुषार्थ 'कर्तव्य :' जीवन के उतार-चढ़ाव पर मार्गदर्शन देते हुए आचार्य प्रवर ने कहा, 'इंसान को केवल भाग्य के भरोसे नहीं बैठना चाहिए और न ही केवल पुरुषार्थ के अहंकार में रहना चाहिए। अच्छा व्यक्ति वही है जो दोनों की उपयोगिता को समझे।'

भाग्यवाद : इसे कठिन समय में मानसिक शांति और समता बनाए रखने के लिए जानना जरूरी है।

पुरुषार्थवाद : यह हमारा प्राथमिक कर्तव्य है। जिस प्रकार एक सुंदर कविता के लिए शब्द और अर्थ दोनों चाहिए, वैसे ही सफल जीवन के लिए भाग्य और पुरुषार्थ का संगम आवश्यक है।

पुरुषार्थ की शक्ति...

ज्योतिष के बजाय कर्म पर दें ध्यान: आचार्यश्री ने साधु-साध्वियों एवं श्रावक समाज को परामर्श दिया कि ज्योतिष, हस्तरेखा और भविष्य फल देखने में अधिक समय नष्ट करने से बचना चाहिए। उन्होंने कहा कि कर्मों के योग से कठिन परिस्थितियां आ सकती हैं, लेकिन ऐसे समय में तनाव लेने के बजाय साहस और मनोबल से काम लेना चाहिए। 'पुरुषार्थ से बहुत कुछ बदला जा सकता है। किया गया प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाता, भले ही फल मिलने में देरी हो जाए। उद्यमी व्यक्ति का लक्ष्मी स्वयं वरण करती है।'

जैन विद्या पुस्तकों का लोकार्पण : प्रवचन के उपरांत आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। इस अवसर पर समण संस्कृति संकाय द्वारा तैयार 'जैन विद्या पाठ्यक्रम' (भाग 1 से 4) की नवीन पुस्तकों का आचार्यश्री के कर-कमलों से लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़, मालचंद बैंगानी और हनुमान लूंकड़ ने अपने विचार रखे। दिल्ली ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने प्रेरणादायी गीत प्रस्तुत किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

व्यंग्य-विनोद

आचार्य भिक्षु में विनोद की प्रखर और सहज मेधा थी। उनका विनोद मानस-गगन को आनन्दमयी ज्योत्सना से परिपूर्ण कर देता था। उनका विनोद मात्र मनोरंजन करने वाला और केवल बौद्धिक विलास नहीं था, वह था अन्तर्भाव को जागृत करने में सक्षम। उनके विनोद में मिलता है कबीर की सुधारवादी चेतना का उन्मुक्त उन्मेष। कुछ एक प्रस्तुत हैं–

1. आचार्य भिक्षु पीपाड़ में प्रवचन कर रहे थे। ताराचंदजी संघवी बोले– उनका प्रवचन मत सुनो, दाह लग जाएगी।

आचार्य भिक्षु बोले– दाह हरे वृक्षों को लगती है, सूखे लकड़ों को नहीं।

2. किसी ने आचार्य भिक्षु से पूछा– कुछ सम्प्रदायों के साधु परस्पर एक-दूसरे को असाधु कहते हैं। आप कृपा कर बताएं, कौन सच्चे हैं?

   आचार्य भिक्षु बोले– दोनों ही सच्चे हैं।

3. आचार्य भिक्षु ने पीपाड़ में चातुर्मासिक प्रवेश किया। वे रात्रि में प्रवचन किया करते थे। एक दिन आप प्रवचन कर रहे थे, तब किसी विरोधी व्यक्ति ने कहा– रात बहुत बीत चुकी है।

   आचार्य भिक्षु बोले– दुःख की रात बड़ी लगती है।

4. एक बार आचार्य भिक्षु प्रवचन कर रहे थे। किसी व्यक्ति ने कहा– आप तो प्रवचन करते हैं और कुछ लोग अलग बैठकर आपकी निंदा करते हैं।

   आचार्य भिक्षु बोले– झालर की झणकार सुनकर कुत्तों का स्वभाव भौंकने का होता है। उनमें इतना विवेक कहां होता है कि वे समझ लें, यह झालर किसी की शवयात्रा में बजाई जा रही है या किसी दूल्हे की वरयात्रा में।

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

जगह तो परिग्रह है

किसी ने स्वामीजी से पूछा– 'पौषध करने वाले को स्थान दिया, उसको क्या हुआ?'

तब स्वामीजी बोले– 'उसने कहा– 'मेरी जगह में पौषध करो', यह कहने वाले को धर्म होता है।'

तब फिर पूछा– 'जगह दी, उसमें क्या हुआ?'

तब स्वामीजी बोले– 'क्या उसने जगह सदा के लिए दे दी? उसने अपनी जगह में पौषध करने की स्वीकृति दी, वह धर्म है। जगह तो परिग्रह है, उसके सेवन करने और कराने से धर्म नहीं होता। सामायिक और पौषध की स्वीकृति देता है, वह धर्म है।'

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

39 श्रावकों की 11 प्रतिमा

आगमों में साधना के लिये अनेक आयाम स्थापित किए गए हैं। उनमें दो मुख्य हैं– अगार व अणगार। इनमें भी साधना की ओर गहराई आए और उत्कृष्टता आए इसके लिए प्रतिमा साधना को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। 'एग्गारसहीं उवासग पडिमाहिं' की ग्यारह प्रतिमा। 'बारसहिं भिक्खू पडिमाहिं'– साधुओं की बारह प्रतिमा। प्रत्येक प्रतिमा साधना के सोपान पर अग्रसर करते में अपनी-अपनी भूमिका अदा करती है। प्रतिमाओं के नाम इस प्रकार है– दर्शन-व्रत-सामायिक-पौषध-कार्यात्सर्ग, ब्रह्मचर्य-सचित्त-आरंभ-प्रेष्य-उद्दिष्ट वर्जक-श्रमण भूत।

1. दर्शन प्रतिमा : समय सीमा– एक मास।

   विधि– सर्व धर्म-पूर्ण धर्म रुचि होना, सम्यक्त्व की विशुद्धि होना तथा उनके दोषों का वर्जन करना।

2. व्रत प्रतिमा– समय सीमा– दो मास।

   विधि– पांच अणुव्रत और तीन गुणव्रत धारण करना तथा पौषध उपवास करना।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

क्या आप जानते हैं?

सेवारत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के भी हरियाली पर खाने का त्याग न होने पर हरियाली पर निष्पन्न आहार निरवद्य स्थान पर लाकर बहराना अविहित है।

साप्ताहिक प्रेरणा

''ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः'' की एक माला फेरे।

पुण्य-पाप और परलोक पर श्रद्धा रखें, शुभ कार्यों में ही मानव जीवन की सार्थकता : आचार्यश्री महाश्रमण

ऋण लेकर घी पीने' की संस्कृति आत्मघाती, संयम और त्याग ही असली सुख

लाडनूं।
10 अप्रैल, 2026

> संदेह हो तो भी 'शुभ कर्म' ही श्रेष्ठ, जोखिम में न डालें अपना परलोक
> -आचार्यश्री महाश्रमण

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता, अखंड परिव्राजक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'क्या परलोक है?' विषय पर मार्मिक उद्बोधन प्रदान किया। जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा परिसर में आयोजित इस धर्मसभा में आचार्यश्री ने आस्तिक और नास्तिक दर्शन के अंतर को तार्किक दृष्टिकोण से स्पष्ट किया।

दार्शनिक विचारधाराओं का विश्लेषण:
आचार्यश्री ने प्रवचन की शुरुआत करते हुए फरमाया कि विश्व में दो धाराएं प्रमुख हैं—आस्तिक और नास्तिक। जो आत्मा, पुण्य-पाप और मोक्ष पर विश्वास करता है, वह आस्तिक है। वहीं, चार्वाक जैसे नास्तिक दर्शन केवल 'प्रत्यक्ष' को मानते हैं, जिनका मंत्र है कि मृत्यु के बाद कुछ नहीं है, अतः ऋण लेकर भी सांसारिक सुखों का उपभोग करो। आचार्यश्री ने इस विचार का खंडन करते हुए फरमाया कि शरीर के भस्मीभूत होने के बाद भी आत्मा की यात्रा निरंतर जारी रहती है।

पुनर्जन्म और तर्क की कसौटी :
पूर्वजन्म की स्मृतियों के अभाव पर तर्क देते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया, 'केवल इसलिए कि हमें पूर्वजन्म याद नहीं है, यह कहना गलत है कि उसका अस्तित्व नहीं है। हमें वर्तमान जीवन की भी कई ताजा बातें याद नहीं रहतीं। ठीक इसी प्रकार, जो वस्तु आंखों से दिखाई नहीं देती, वह अनुपस्थित नहीं होती। उन्होंने आत्मा और पुनर्जन्म को एक शाश्वत सत्य बताया।

बुद्धिमान मनुष्य के लिए 'सुरक्षित' पथ :
शास्त्रकारों के मत को साझा करते हुए आचार्यश्री ने एक महत्वपूर्ण व्यावहारिक सूत्र प्रदान दिया। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि यदि किसी के मन में परलोक को लेकर संदेह भी हो, तब भी बुद्धिमानी इसी में है कि वह शुभ कर्म करे। तर्कः यदि परलोक नहीं भी हुआ, तो अच्छे कर्मों से कोई हानि नहीं होगी। चेतावनीः लेकिन यदि परलोक और कर्म फल का अस्तित्व सत्य है (जो कि है), तो नास्तिक व्यक्ति को अपने बुरे कर्मों के भारी परिणाम भोगने पड़ेंगे।

श्रद्धा और संयम का संदेश :
आचार्यश्री ने श्रद्धालुओं का आह्वान किया कि वे परलोक और मोक्ष पर अटूट श्रद्धा रखें। जीवन में त्याग, संयम और साधना को प्राथमिकता दें। उन्होंने जोर देकर फरमाया कि पाप कर्मों से बचकर ही आत्मा का कल्याण संभव है। प्रवचन के पश्चात आचार्यप्रवर ने चारित्रात्माओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया। सभा में बड़ी संख्या में स्थानीय एवं प्रवासी श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

अर्हम्

'शासन श्री' साध्वी श्री चंदनबाला जी का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म :	30 जून 1939, छात्तर, हरियाणा
माता-पिता :	स्व. चमेली देवी जैन-स्व. उग्रसेन जैन
कर्म भूमि :	दिल्ली
शिक्षा :	हिन्दी में रत्न
दीक्षा :	राष्ट्रपति भवन, दिल्ली (तत्कालीन राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जी द्वारा अभिनन्दन पत्र भेंट)
दीक्षा प्रदाता :	आचार्य श्री तुलसी
गुरुकुलवास :	लगभग ४० वर्ष
बहिर्विहारी :	सन् २००७ से
व्यवस्था निकाय :	स्वास्थ्य निकाय
अलंकरण :	'शासनश्री' आ. महाश्रमण जी द्वारा
न्यातिले :	
बहन :	साध्वी वर्धमानश्री जी
भांजी :	साध्वीश्री कुन्दनरेखाजी
स्वर्गवास/देवलोक गमन :	9 अप्रैल, 2026, गुरुवार

आचार्यश्री महाश्रमणजी : योगक्षेम चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पंकज कुमार डागा द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। अध्यक्ष : पवन मांडोत